एक जीवंत जीवन जीना

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ

“जब तक सारा विश्व सुखी नहीं हो जाता, व्यक्तिगत सुख स्थायी नहीं हो सकता”

आप सभी को नव वर्ष की शुभकामनाएँ !

पिछले वर्ष के पूर्व के वर्ष से, कोविड -19 के खतरे का हमारे दैनिक जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। हालाँकि जापान में इस वायरस से संक्रमित लोगों की संख्या में कमी आई है, लेकिन संसार के कुछ देशों में यह फिर से बढ़ रहा है। हमें अपनी सावधानियों को नहीं भूलना चाहिए, और हमें संक्रमण को रोकने के अपने प्रयास जारी रखना चाहिए।

भले ही हमारे धर्म केंद्रों को बंद कर दिया गया हो, हमारे सदस्यों ने पत्र, फोन कॉल और ईमेल के माध्यम से एक-दूसरे का समर्थन करना जारी रखा है, क्योंकि दूसरों के लिए करुणा उनके स्वभाव में है। इससे मैं बेहद प्रभावित हुआ हूँ।

मैंने अतीत में कहा है कि मुझे उम्मीद है कि कोविड -19 महामारी हमारे लिए इस बात पर पुनर्विचार करने का अवसर होगा कि लोगों के लिए सबसे अधिक महत्व का क्या होना चाहिए।

जैसे-जैसे संक्रमण फैलता है, एक व्यक्ति के मन की सबसे महत्वपूर्ण सोच दूसरों की देखभाल करना होता है- दूसरे के स्वास्थ्य के बारे में चिंतित होना, यह सोचना कि क्या वे अपने जीवन से संघर्ष कर रहे हैं, इस बात की चिंता करना कि उनके बच्चे ठीक हैं। ऐसी मनोवृत्ति विकसित करते हुए अपने दैनिक जीवन पर चिंतन करते हुए, हम दैनिक जीवन के ऐसे अनेक मामलों से अवगत हो सकते हैं, जिन्हें पहले के समय में अनदेखा किया जाता था।

अतीत में, मैंने कांजी कैरक्टर (省/*shō*/शो) के दो अर्थों की चर्चा की है, “मिटाना और चिंतन करना।” मेरा मानना है कि पिछले दो वर्षों में कोविड -19 महामारी ने हमें उन चीजों को प्रकट कर दिया है, जिन्हें हमें समाप्त करना चाहिए, और वे चीजें जिन पर हमें विचार करना चाहिए।

इस महामारी के साथ, भले ही जापान में संक्रमण का अन्त हो जाए, लेकिन यह पता नहीं है कि अन्य देशों में संक्रमण जारी रहने पर खतरा कब वापस आएगा।

एक जापानी उपन्यासकार और बाल साहित्य के कवि, केंजी मियाजावा (1896-1933) के शब्दों की दृढ़ता से याद आती है: "जब तक पूरा संसार खुश नहीं है, तब तक व्यक्ति खुश नहीं रह सकता है।" मियाजावा का यह कथन हमारे लिए बुद्ध की महाकरुणा की अत्याधुनिक अभिव्यक्ति के रूप में सोच सकते हैं; हम सभी को इन शब्दों पर चिंतन करना चाहिए।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए, मैं अब आपके साथ अपने "सदस्यों के लिए दिशानिर्देश 2022 के लिए आस्था का अभ्यास" साझा करना चाहूँगा।

इस वर्ष मार्च में, रिश्शो कोसेइ काइ अपनी 84वीं वर्षगाँठ मना रहा है। धर्मदीप की विरासत के बाद से तीस वर्ष बीत चुके हैं।

आशा की जाती है कि, इस वर्ष भी, हम अपने दैनिक जीवन में स्वयं को क्वारंटाइन करना और घर से काम करना जारी रखेंगे। जबकि हम सम्पूर्ण संसार में कोविड -19 महामारी की वर्तमान स्थितियों के लिए तत्पर हैं, हमें अपने विश्वास के माध्यम से पति और पत्नियों के रूप में, माता-पिता के रूप में स्वयं को एक साथ प्रतिबद्ध होना चाहिए, जिससे युवा लड़कों और लड़कियों के साथ-साथ युवा लोगों का पालन सुचारू रूप से हो। जो अगली पीढ़ी को सहन हो और हमारा पारिवारिक सम्बन्धों को क्रम में रखेगा, उनके चरित्र को आकार देने के उद्देश्य पूरा हो, साथ ही हमें अपने देश की श्रेष्ठ परंपरा को आगे बढ़ाते हुए महाशांति और सद्भाव की भावना पर आधारित एक शानदार देश की प्राप्ति के लिए भी आगे बढ़ना चाहिए। मुझे आशा है कि हम सभी इन लक्ष्यों के लिए रचनात्मक और ईमानदारी से काम करेंगे।

जैसा कि मैंने पिछले वर्ष इस प्रकाशन में आपको बताया था, हमारा महत्वपूर्ण मिशन, प्राथमिक लक्ष्य, जिसमें हमें अपने सभी प्रयास करने चाहिए, वह है मानव विकास, मनुष्य का उत्थान। इस मिशन में सभी पीढ़ियों के सदस्य शामिल होने चाहिए: हम में से “पतियों और पत्नियों” का अर्थ है युवा जोड़े (युवा पीढ़ी), पिता और माता, हमारे जीवन के प्रमुख (मध्य-पीढ़ी), और माता-पिता (वृद्धा पीढ़ी) हैं। यह न केवल हमारे संगठन के लिए बल्कि हमारे समाज और राष्ट्र के लिए भी सबसे महत्वपूर्ण है।

इसका आधार और सबसे महत्वपूर्ण पहलू है,परिवार में घर की शिक्षा। क्योंकि बुद्धिमतापूरण पारिवारिक शासन (पारिवारिक सम्बन्धों को क्रम में रखना) दृढ़ चरित्र निर्माण और अनुशासन प्रदान करता है, यह सार्वजनिक शिक्षा (स्कूलों) में भी वृद्धि करता है और सही मायने में “मनुष्य की परवरिश” के साथ सम्बन्ध रखता है।

इसके अलावा, मैंने अतीत में कहा है कि वास्तव में पारिवारिक सम्बन्धों को क्रम में रखने के लिए, यह आवश्यक है कि हमारे घरों में पारिवारिक जीवन के केंद्र के रूप में एक बौद्ध वेदी हो, और यह कि हम घर के लिए तीन प्रथाओं का पालन करते हैं- हम सुबह की शुभकामनाओं को आदान-प्रदान करते हैं, जब हमसे बात की जाती है तो हम स्पष्ट और सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं, और हम अपने जूतों को उतारने के बाद बड़े करीने से पंक्तिबद्ध करते हैं। सदस्यों के रूप में, हम हमेशा इन प्रथाओं का सम्मान करते आए हैं।

हम में से प्रत्येक में एक शानदार देश की स्थापना के लिए रचनात्मक और गंभीरता से कार्य करने की इच्छा होनी चाहिए

बच्चों और युवाओं की शिक्षा के बारे में जो मैंने बीते समय में कहा है, उसमें मैं इस वर्ष निम्नलिखित वाक्य जोड़ रहा हूँ, "इसके अलावा, हमें अपने देश की सर्वोत्तम परंपरा को आगे बढ़ाते हुए, एक महान देश बनाने के लिए भी आगे बढ़ना चाहिए, जो महाशांति और सद्भाव की भावना पर आधारित हो।"

प्राचीन काल में जापान का नाम "यमातो" था। उस नाम का कांजी कैरेक्टर का अर्थ "महाशांति" या "महासद्भाव" है। उस भावना को निरंतर बनाए रखना हमारा राष्ट्रीय आदर्श बन गया है।

प्रिंस शोतोकू (593-622) ने अपने सत्रह-अनुच्छेद संविधान (604) में, "सद्भाव का मूल्यांकन किया जाना" वाक्यांश शामिल किया। इस वाक्यांश में निहित भावना उस समय न केवल राष्ट्र-निर्माण के लिए आदर्श था, बल्कि यह आज के जापानी लोगों की राष्ट्रीय विशेषताओं और आध्यात्मिकता में भी रहता है।

इसके अलावा, यह भी कहा जाता है कि जो परम्पराएँ और इतिहास जापान की पहचान हैं, वे उसकी सम्राट प्रणाली में पाए जाते हैं।

जापानी शाही परिवार का कोई व्यक्तिगत पारिवारिक नाम नहीं है। इसका मतलब यह है कि लंबे समय से वे हमेशा लोगों के साथ एक होकर रहे हैं। एक राष्ट्र के रूप में जापान की स्थापना के समय से, जापानी लोग कई कठिनाइयों का सामना करते हुए भी एक समृद्ध, विशिष्ट जापानी संस्कृति और परंपरा बनाने में सक्षम रहे हैं। हम कह सकते हैं कि ऐसा इसलिए है, क्योंकि सम्राट राष्ट्र की आधारशिला रही है, और जापानी लोग उस आधार पर एकजुट हुए और एक साथ मिलकर काम किया है।

इस बीच, युद्ध के बाद जापान ने आर्थिक उन्नति और तर्कसंगता का पीछा किया है। जापान के इतिहास और परंपराएँ, और उन्हें विकसित करनेवाली भावना को इस हद तक उपेक्षित कर दिया गया है कि ऐसा लगता है कि उन्हें भुला दिया गया है।

पूरे विश्व की ओर अपना ध्यान आकर्षित करते हुए, मैं देख सकता हूँ कि राष्ट्रवादी सोच बढ़ रही है। उस संदर्भ में, मेरा मानना है कि जापान के लिए वैश्विक समुदाय के सदस्य के रूप में विभिन्न भूमिकाएँ निभाना बहुत महत्वपूर्ण है, जो कि जापानी परंपरा में शामिल शांति और सद्भाव की भावना का पूरा उपयोग करता है।

ऐसा होने के लिए सबसे आवश्यक है कि हमारा अपना देश अच्छा करे। एक शानदार देश की स्थापना के लिए आवश्यक इच्छा और उसका कार्यान्वयन सिर्फ राजनेताओं पर नहीं छोड़ा जाना चाहिए; नागरिकों के रूप में यह हम में से प्रत्येक पर निर्भर है कि हम अपने हृदय को और अधिक खोलें और रचनात्मक और गंभीरता से काम करें।

यह नारा "अपने हृदय एवं मन एवं में खेती करना" अंततः यह जानने के बारे में है कि आप वास्तव में कौन हैं।

जैसा कि मैंने सदस्यों के लिए अपने दिशानिर्देशों में उल्लेख किया है: विश्वास का अभ्यास। पिछले वर्ष 15 नवंबर को संस्थापक से धर्म के दीपक की मेरी विरासत की तीसवीं वर्षगाँठ थी। जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे आश्चर्य होता है कि वास्तव में तीस वर्ष हो गए हैं।

उस अवसर से मैं कह रहा हूँ "यह एक पंक्ति -- मैं चाहूँगा कि हमारे सभी सदस्य एक के बाद एक कंधे से कंधा मिलाकर पंक्ति बद्ध हो जाय।"

आप में से प्रत्येक सदस्य में बुद्ध प्रवृति है। जैसा आप करते हैं, मै आप में से प्रत्येक को बोधिसत्व के रूप में बुद्ध मार्ग पर चलते देखना चाहता हूँ, जो दूसरों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा है। यह विचार "एक पंक्ति" में मुहावरे के रूप में है।

1992 में, धर्म के दीपक की विरासत के अगले वर्ष, मैंने एक दौर का आरंभ किया, जिसे मैंने शिनसेकी मावारी कहा, जिसका अर्थ है रिश्तेदारों का दौरा करना। मैंने जापान और विदेशों में धर्म केंद्रों सहित 130 स्थलों का दौरा किया, और अपने साथी सदस्यों से मिलने में सक्षम हुआ।

हम सभी एक-दूसरे के साथ बातचीत करके, एक-दूसरे पर निर्भर करते हुए और एक-दूसरे से प्रभावित होकर जीते हैं। इसे व्यापक दृष्टि से देखने पर यह कहा जा सकता है कि नहीं केवल मनुष्य, बल्कि ब्रह्मांड में सभी चीजें एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं, दूसरे शब्दों में, वे भी एक दूसरे के रिश्तेदार हैं। इन सभी संबंधों में, सबसे करीबी और सबसे अधिक सहानुभूति रखने वाले रिश्तेदार हमारे सदस्य हैं, और इसलिए मैंने कहा कि मैं "रिश्तेदारों से मिलने जा रहा हूँ।"

जब संस्थापक ने पहली बार उस वाक्यांश को सुना, तो वह यह कहते हुए बहुत प्रसन्न हुए, "रिश्तेदारों से मिलने- क्या अद्भुत वाक्यांश है!" और "निचिको हाल की सेवाओं में भाग लेकर खुश है।" संस्थापक ने मजाक में यह भी कहा, "उन्हें धर्म का दीपक पहले ही विरासत में मिल जाना चाहिए था।"

हालाँकि, मुझे धर्म का दीपक विरासत में मिलने के लगभग आठ वर्ष बाद, 4 अक्टूबर, 1999 को संस्थापक ने निन्यानबे वर्ष की आयु में निर्वाण में प्रवेश किया। तब तक, मुझे हमेशा लगता था कि जब कुछ सामने आता है, तो मैं बस संस्थापक से मदद माँग सकता हूँ। फिर जब उनका देहांत हुआ तो मुझे लगा कि ऐसा करके वे हमें उनसे स्वतंत्र होने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

जैसा कि मैंने अक्सर कहा है, संस्थापक की शिक्षाएँ, जिसे संक्षेप में माता-पिता के प्रति समर्पण कहा गया है, पूर्वजों के प्रति श्रद्धा और बोधिसत्व चर्या थी।

इन सबसे ऊपर, बोधिसत्व चर्या बुद्ध की शिक्षा के केंद्र में है। इसका अर्थ है स्वयं के ज्ञानोदय की अभीप्सा करना और बोधिसत्व पथ पर आगे बढ़ना। अधिक परिचित शब्दों में कहा गया है, यह करुणा और सद्विचार के मन के साथ मार्ग पर चलना है। मेरा मानना है कि संस्थापक सबसे ज्यादा यही बताना चाहते थे।

संस्थापक से सीधे मार्गदर्शन प्राप्त करने वाले जीवित सदस्यों की संख्या घट रही है। मैं उन सदस्यों को संस्थापक से प्राप्त मानसिकपूर्णता और मुक्ति के अनुभव को अधिक से अधिक लोगों के साथ साझा करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ।

धर्मदीप का विरासत में मिलने के बाद जो मैं सबसे ज्यादा बताना चाहता था, वह यह है कि मैं चाहता था कि आप अपने सच्चे स्व को जानें। अन्य लोगों के बारे में बात करना, या संसारिक बातों पर चर्चा करना आसान है। हालाँकि, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम स्वयं पर चिंतन करें और स्वयं को जानें।

तो फिर, हम अपने आप को कैसे जानेंगे? इस बात को ध्यान में रखते हुए, 1998 में रिश्शो कोसेइ काइ की स्थापना की साठवीं वर्षगाँठ के अवसर पर, मैंने "अपने मन और मस्तिष्क की खेती" की मूल दृष्टि प्रस्तुत करना शुरू किया, जिसके तहत हम सभी ने एक साथ इसकी यात्रा आज तक तय की है। "अपने मन और मस्तिष्क की खेती" इस विचार को संदर्भित करता है कि हमारे मन और मस्तिष्क बुद्धत्व के बीज बोने के लिए उत्कृष्ट स्थान हैं।

कई मामलों में, लोग स्वयं को एक निर्धारित तरीके से देखते हैं, शायद सीमित और छोटा होने के नाते, सोचते हैं कि "यह वही है जो मैं हूँ।" फिर वे अधीन हो जाते हैं या, इसके विपरीत, अभिमानी हो जाते हैं। लेकिन क्या यही उनका सच्चा स्व है?

यहाँ तक कि शाक्यमुनि ने भी सत्य और धर्म के प्रति प्रबुद्ध होने से पहले मानवीय दुःख और पीड़ा का अनुभव किया था। तो, हम भी मनुष्य हैं, स्वाभाविक रूप से सत्य और धर्म को समझने की क्षमता रखते हैं, और हमारे पास स्वयं समस्याओं को हल करने की शक्ति है।

एक बार जब हम अपने सच्चे स्व को जान लेते हैं, तो हम अपने सामने आने वाली विभिन्न समस्याओं को दूर करना शुरू कर सकते हैं और वास्तव में सार्थक जीवन जीना शुरू कर सकते हैं।

यही कारण है कि “अपने मन और मस्तिष्क की खेती” का नारा अंततः यह जानने के बारे में है कि आप वास्तव में कौन हैं। जानने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि "आप" जो अब इस संसार में रह रहे हैं, आपके पास बुद्ध के समान मन और मस्तिष्क है और आपके पास अपने जीवन और सांसारिक मसलों को हल करने की क्षमता और जिम्मेदारी है, और तुम सभी को इन बातों को आप ही समझ लेना है।

मुझे धर्मदीप को विरासत में मिले तीस वर्ष से अधिक समय हो गया है, हमारे सदस्यों की संख्या जो इसे स्वयं जान गए हैं और जीवंत जीवन जी रहे हैं, लगातार उनकी वृद्धि हुई है। दूसरी ओर, हमारे बहुत से सदस्य अपने वास्तविक स्व से अनजान रहते हैं।

यह मेरी सच्ची आशा है कि धर्म के साथ उनके सम्बन्ध को समृद्ध करके और मार्ग में उनका मार्गदर्शन करके, वे रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्य बन सकते हैं, जो वास्तव में बुद्ध की शिक्षा की भावना को अनुभव करते हैं।

कोविड-19 महामारी इस वर्ष भी जारी है, और हो सकता है कि हम अपनी पूर्व धार्मिक गतिविधियों को फिर से शुरू करने में सक्षम नहीं हों। हालाँकि, "यह वास्तव में मार्ग का स्थान है" की भावना से, यहाँ और अभी वह स्थान है जहाँ हम मार्ग की गवेषणा और अभ्यास करते हैं, आइए हम अपने परिवारों को, जो समाज की सबसे छोटी इकाई है, क्रम में रखते हुए, परिश्रम से स्वयं को समर्पित करें और भविष्य को आगे ले जाने वाली पीढ़ियों के साथ मिलकर अपने विकास को जारी रखें।

Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement

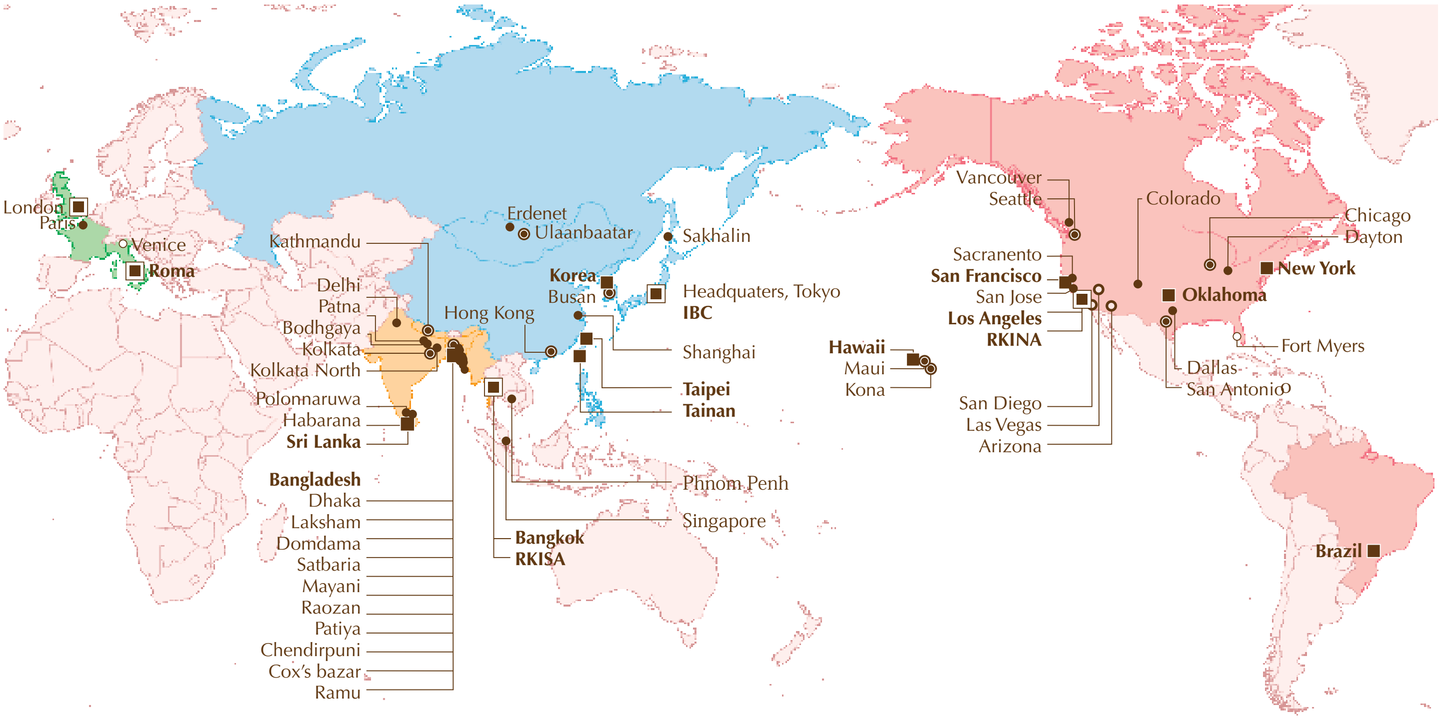

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii
2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, USA
TEL: 1-808-455-3212 FAX: 1-808-455-4633
Email: sangha@rkhawaii.org URL: http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1809 Nani Street, Wailuku, HI 96793, USA
TEL: 1-808-242-6175 FAX: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, USA
TEL: 1-808-325-0015 FAX: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, USA
TEL: 1-323-269-4741 FAX: 1-323-269-4567
Email: rk-la@sbcglobal.net URL: http://www.rkina.org/losangeles.html

Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco
(Address) 1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, USA
(Mail) POBox 778, Pacifica, CA 94044, USA
TEL: 1-650-359-6951 Email: lotusbuddhist@gmail.com
URL: https://sf-buddhism.org/

Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco
Rissho Kosei-kai of Sacramento
Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York
320 East 39th Street, New York, NY 10016, USA
TEL: 1-212-867-5677 Email: rkny39@gmail.com URL: http://rk-ny.org

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, USA
TEL: 1-773-842-5654
Email: murakami4838@aol.com URL: http://rkchi.org

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
URL: http://www.rkftmyersbuddhism.org

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma
(Address) 2745 N.W. 40th St., Oklahoma City, OK 73112, USA
(Mail) POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, USA
TEL: 1-405-943-5030 FAX: 1-405-943-5303
Email: rkokdc@gmail.com URL: http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
617 Kling Drive, Dayton, OH 45419, USA
URL: http://www.rkina-dayton.com

The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)
2707 East First St., Suite #1, Los Angeles, CA 90033, USA
TEL: 1-323-262-4430 FAX: 1-323-269-4567
Email: info@rkina.org
URL: https://www.buddhistcenter-rkina.org

Rissho Kosei-kai of Vancouver
Please contact RKINA

Rissho Kosei-kai International

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
(Address) 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, USA
(Mail) POBox 692148, San Antonio, TX 78249, USA
TEL: 1-210-558-4430 FAX: 1-210-696-7745
Email: dharmasanantonio@gmail.com
URL: http://rksabuddhistcenter.org

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, USA
TEL: 1-253-945-0024 Email: rkseattlewashington@gmail.com
URL: http://buddhistlearningcenter.org

Risho Kossei-kai do Brasil
Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP, CEP 04116-060, Brasil
TEL: 55-11-5549-4446, 55-11-5573-8377
Email: risho@rkk.org.br URL: http://www.rkk.org.br

在家佛教韓国立正佼成会　Korean Rissho Kosei-kai
〒 04420 大韓民国 SEOUL 特別市龍山區漢南大路 8 路 6-3
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
TEL: 82-2-796-5571　FAX: 82-2-796-1696

在家佛教韓国立正佼成会釜山支部
Korean Rissho Kosei-kai of Busan
〒 48460 大韓民国釜山廣域市南區水營路 174, 3F
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
TEL: 82-51-643-5571　FAX: 82-51-643-5572

社團法人在家佛教立正佼成會　Rissho Kosei-kai of Taipei
台湾台北市中正區衡陽路 10 號富群資訊大厦 4 樓
4F, No. 10, Hengyang Road, Jhongjheng District, Taipei City 100, Taiwan
TEL: 886-2-2381-1632, 886-2-2381-1633　FAX: 886-2-2331-3433

台南市在家佛教立正佼成會　Rissho Kosei-kai of Tainan
台湾台南市東区崇明 23 街 45 號
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
TEL: 886-6-289-1478　FAX: 886-6-289-1488
Email: koseikaitainan@gmail.com

Rissho Kosei-kai South Asia Division
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8141　FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsikhel, Sanepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai Society of Kolkata
89 Srirampur Road (VIP), Garia, Kolkata 700084, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center
Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rampur, Gaya-823001,
Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center
Please contact Rissho Kosei-kai Society of Kolkata

Rissho Kosei-kai of Central Delhi
77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Singapore
Please contact Rissho Kosei-kai International

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
W.C. 73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke, Khan Reouseykeo,
Phnom Penh, Cambodia

RKISA Rissho Kosei-kai International of South Asia
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8141　FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Bangkok
Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216　FAX: 66-2-716-8218　Email: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei Dhamma Foundation
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
TEL: 94-11-2982406　FAX: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa
Please contact Rissho Kosei Dhamma Foundation

Rissho Kosei-kai Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
TEL: 880-2-41360470

Rissho Kosei-kai Mayani
Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Damdama
Damdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Satbaria
Village: Satbaria Bepari Para, Chandanaih, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Chendhirpuni
Village: Chendhirpuni, P.O.: Adhunogar, P.S.: Lohagara, Chittagong,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai Raozan
Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Laksham
Village: Dhupchor, Laksham, Comilla, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Dhaka North
408/8 DOSH, Road No 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar
Ume Burmize Market, Tekpara, Sadar, Cox's Bazar, Bangladesh

Please contact Rissho Kosei-kai Bangladesh
Rissho Kosei-kai Patiya
Rissho Kosei-kai Ramu
Rissho Kosei-kai Aburkhil

Buddiyskiy khram "Lotos"
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk 693005, Russia
TEL: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point, Hong Kong, China

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai
Please contact Rissho Kosei-kai International

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
(Address) 15F Express Tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
(Mail) POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia
TEL: 976-70006960　Email: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Erdenet
Please contact Rissho Kosei-kai International

Rissho Kosei-kai di Roma
Via Torino, 29, 00184 Roma, Italia
TEL/FAX: 39-06-48913949　Email: roma@rk-euro.org

Please contact Rissho Kosei-kai di Rome
Rissho Kosei-kai of Paris
Rissho Kosei-kai of Venezia

Rissho Kosei-kai of the UK
29 Ashbourne Road, London W5 3ED, UK
TEL: 44-20-8933-3247　Email: info@rkuk.org　URL: https://www.rkuk.org
Facebook: https://www.facebook.com/rkuk.official
Twitter: https://twitter.com/rkuk_official
Instagram: https://www.instagram.com/rkuk_official

Rissho Kosei-kai International Buddhist Congregation (IBC)
166-8537 東京都杉並区和田 2-7-1 普門メディアセンター 3F
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan
TEL: 03-5341-1230　FAX: 03-5341-1224　URL: http://www.ibc-rk.org

Published by Rissho Kosei-kai International